'ग्लोबल इंटर–फेथ वाश एलाएन्स' के बिहार सम्मेलन में बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–04 जनवरी, 2017, समय–दोपहर–12:00 बजे स्थान–होटल चाणक्या)

'ग्लोबल इंटर–फेथ वाश एलाएन्स' के बिहार सम्मेलन में प्रमुख रूप से उपस्थित राज्य के लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण मंत्री श्री कृष्णनन्दन प्रसाद वर्मा जी, एलाएन्स के संस्थापक एवं अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी, जो परमार्थ निकेतन ऋषिकेश के अध्यक्ष तथा गंग एक्शन परिवार के भी संस्थापक हैं, इमाम उमर अहमद इलयासी जी, अकाल–तख्त स्वर्ण मंदिर के मुख्य जत्थेदार संत ज्ञानी गुरूवचन सिंह जी, तख्त पटना साहिब के जत्थेदार भाई इकबाल सिंह जी, आचार्य लोकेश मुनि जी, लामा लोबजंग जी, भाई मोहिन्दर सिंह जी, किरनजोत कौर जी, संत बलबीर सिंह सीचेवाल जी, प्रो॰ जसपाल सिंह जी, भाई साहिब सतपाल सिंह खालसा जी, श्री कुलदीप सिंह बदूनगर जी, भाई जगजीत सिंह दर्दी जी, श्री बिन्नी सरीन जी, सरदार परमजीत सिंह चंदोख जी, सरदार कुलदीप सिंह भोगल जी, सम्मेलन की आयोजन–संस्था की महासचिव साध्वी भगवती सरस्वती जी, यूनिसेफ बिहार के मुख्य क्षेत्र अधिकारी जनाब असदुर रहमान जी, श्री अरबिन्द चौधरी जी, 'प्रकाश–उत्सव' में पूरी दुनियाँ से पधारे श्रद्धालुगण, प्यारे बिहारवासियों, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों, सज्जनों!!

श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज के '350वें पावन प्रकाश–उत्सव' के सुअवसर पर 'ग्लोबल इन्टर–फेथ वाश एलायन्स' के 'बिहार–सम्मेलन' में शामिल होना मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। स्वामी चिदानन्द सरस्वती जी के मार्ग–दर्शन में पूरे विश्व के स्तर पर मानवता को ज्ञान, प्रेम, सद्भाव, स्वच्छता, प्रकृति–प्रेम का अनुपम संदेश देनेवाली इस संस्था का 'बिहार–सम्मेलन' भौतिकतावाद से त्रस्त मनुष्य को एक नयी दिशा और दृष्टि प्रदान करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। समीचीन, प्रासंगिक और व्यावहारिक जीवन–दृष्टि तथा प्रकृति–प्रेम वाली यह

संस्था, पूरी मानवता को आज वैज्ञानिक धरातल पर भी सफल आज एक ऐसी जीवन–शैली का ज्ञान प्रदान कर रही है, जो न केवल 'भौतिकवाद' और 'बाजारवाद' के इस दौर में हमारी मानवीय संवेदनाओं को सुरक्षित बचाये रखने की प्रेरणा देती है, बल्कि एक ऐसे अध्यात्मवाद की ओर हमें उन्मुख करती है, जिसका लक्ष्य सरल सहज भाव से मानवीय शक्ति पर विश्वास रखते हुए विश्वमैत्री और विश्व मानवता का अनुपम संदेश देना है।

हमारे सभी धर्मग्रन्थों में परोपकार तथा त्याग को मनुष्य का सच्चा धर्म माना गया है और हिंसात्मक और शोषणपरक मनोवृत्ति को अधर्म। हमारी भारतीय संस्कृति भी पूरे विश्व को अपने परिवार के समान मानने की शिक्षा हमें देती है। सभी सुखी हों, सभी प्रसन्न हों, सबका जीवन निरापद हो, यह शुरू से हमारी मंगलकामना रही है। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' को मानने वाली हमारी भारतीय संस्कृति में राष्ट्रभक्ति और विश्वमैत्री में कोई वास्तविक विरोधाभास नही है। हमारी राष्ट्रभक्ति हमें विश्व मानवता को सशक्त बनाने की प्रेरणा देती है। भारतीय संविधान की 'प्रस्तावना' में जिस धर्मनिरपेक्षता का उल्लेख है, वह भी हमें सभी धर्मों, सम्प्रदायों, वर्गों, जातियों, समूहों के प्रति सहिष्णुता, सम्मान और समव्यवहार की प्रेरणा देती है। अर्थात्, सर्वधर्म समभाव भारतीय संविधान की भी मूल आत्मा में शामिल है।

सामाजिक समरसता का मूल आधार है–पारस्परिक निर्भरता। हम सबको अपनी शारीरिक, बौद्धिक, धार्मिक व अन्य सभी प्रकार की जरूरतों के लिए एक दूसरे पर निर्भर रहना पड़ता है। इस प्रकार हम सबके जीवन का अस्तित्व ही पारस्परिक निर्भरता पर टिका हुआ है। यही सामाजिक समरसता का आधार है।

इन्सान किसी भी धर्म या सम्प्रदाय का मतावलम्बी हो, किसी जाति या बिरादरी का हो, गरीब हो या अमीर हो, बालक, जवान या बूढ़ा

हो, पुरूष हो या स्त्री हो, गोरा हो या श्याम वर्ण का हो, शिक्षित हो या अशिक्षित हो–सब में ईश्वर का अंश है, सबके खून का रंग एक है, सबको भूख लगती है। सब बीमार भी होते हैं, सबकी शारीरिक जरूरतें एक होती है–तो आपस में भेदभाव क्यों, वैमनस्यता क्यों, छोटे–बड़े या ऊँच–नीच का भाव क्यों? यह नहीं होना चाहिए। इन बातों से हमारी राष्ट्रीयता क्षीण होती है। सामाजिक समरसता के भाव को ठेस पहुँचती है। हमें दूसरे की मदद के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। हमें दूसरे के प्रति उपकार, करूणा और दया का भाव रखना होगा, क्योंकि हम सब भारत की सन्तान हैं। समाज में जब यही भावना बलवती बनेगी, तभी सामाजिक समरसता आएगी।

मित्रों, आज हम जिस दशमेश गुरू श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज के '350वें प्रकाश–उत्सव' के उपलक्ष्य में यहाँ एकत्रित हुए हैं, वे भी सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता पर बहुत बल देते थे। गुरू जी शक्ति–संचय और प्रेम दोनों का संदेश देते थे। उनकी मान्यता थी कि एक आदर्श मनुष्य के लिए शास्त्र–ज्ञान जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी उसके लिए शस्त्र–शिक्षा भी है। शक्ति, भक्ति और प्रेम की आराधना से मनुष्य अपने जीवन में सफल हो सकता है, ऐसा गुरूजी का मानना था। गुरूजी असत्य और अन्याय के प्रतिकार को भी उतना ही जरूरी मानते थे, जितना वे प्रेम और त्याग के पथ पर चलने को आवश्यक बताते थे। स्वामी विवेकानन्द ने गुरूजी के विषय में कहा था कि–''गुरू गोबिन्द सिंह ने अपनी तलवार की चमक से मरती हुई भारतीय आत्मा को सत्य के प्रकाश और प्राणदायक ऊर्जा से भरकर जीवंत बना दिया।''

'ग्लोबल इन्टर–फेथ वाश एलाएन्स' संस्था ज्ञान और प्रेम का संदेश पूरे विश्व में आज प्रसारित कर रही है। विभिन्न धर्मों के संत–महात्मा, गुरू और धर्मोंपदेशक यहाँ मंच पर विराजमान हैं, आप इनमें से कुछेक के संदेशों से यहाँ लाभान्वित हुए और आगे भी ये

आपको उद्‌बोधित करेंगे। आज विश्व को कई गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ राह है। जनसंख्या की तीव्र गति से वृद्धि, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, पर्यावरण संकट, आतंकवाद, भ्रष्टाचार आदि की समस्या तो हमारे लिए गंभीर चुनौतियाँ बनकर खड़ी है ही, जल की समस्या भी आनेवाले दिनों में एक संकट का रूप लेती जा रही है। एक अनुमान के मुताबिक आगामी 12–13 वर्षों बाद ही भारत में आवश्यकता से काफी कम जल हमारे उपयोग के लिए बचेगा। स्वच्छ जल, यानी पीने के लिए साफ पानी अगर नहीं रहे, तो प्राणी का जीना दू–भर हो जाए। आज आवश्यक है कि 'स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत' के सपने को साकार करने के लिए स्वच्छ पेयजल एवं शौचालय की समुचित व्यवस्था, धरती पर हरियाली के लिए वृक्षारोपण आदि कार्यक्रमों को अपने धार्मिक मिशन से भी जोड़कर इसे जन–जन तक पहुँचाये। ''सर्वधर्म स्वच्छता एवं सद्‌भावना संकल्प कार्यक्रम' की सफलता इसी बात में सन्निहित है कि सभी धर्म–गुरू और धर्मोपदेशक भी स्वच्छता और सद्‌भावना के इस संकल्प को अपने धार्मिक संदेशों में शामिल करें। आप की संस्था का यह प्रयास अत्यन्त प्रासंगिक और सार्थक है, जो आज के समय की सबसे बड़ी माँग है।

मैं आप सबको नववर्ष की बधाई देता हूँ। श्री गुरू गोबिन्द सिंह जी महाराज के '350वें 'प्रकाश–उत्सव' के सुअवसर पर आयोजित 'ग्लोबल इन्टर–फेथ वाश एलाएन्स' के इस बिहार–सम्मेलन की समग्र सफलता की मैं मंगलकामना करता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।